International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 1, January 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

मुगल काल में प्रमुख औद्योगिक एवं व्यापारिक नगर

डॉ0 वन्दना कलहंस
एसोसिएट प्रोफेसर
विभाग–इतिहास,
बी0एस0एन0वी0, पी0जी0कालेज,
लखनऊ।

व्यापारिक क्षेत्र में भारत का वैदेशिक सम्बन्ध बहुत पुराना और समृद्ध रहा है। भारत का यह व्यापारिक संतुलन पूर्णतः यहाँ के पक्ष में था। भारत को सोने की चिड़िया कहा जाता था यह सोना उसे व्यापार से ही प्राप्त होता था। इसके लिए स्वाभाविक था कि भारत में कुछ प्रमुख औद्योगिक और व्यापारिक नगर भी थे। ये नगर भारत के प्रमुख मार्गो से जुडे हुए थे। यहाँ से समस्त व्यापारिक (आंतरिक और वाहा) गतिविधियों को संचालित किया जाता था। प्रसंगवश कुछ प्रमुख व्यापारिक नगरों का यहाँ उल्लेख करना समीचीन होगा।

आगरा

मुगल काल में आगरा प्रमुख रूप से औद्योगिक एवं व्यापारिक नगर के रूप में प्रसिद्ध हुआ। आगरा का महत्व सभी मुगल सम्राटों के समय अत्यधिक था। इसकी केन्द्रीय स्थिति व्यापारिक दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण थी। यह नगर कारवाँ के मार्ग पर पड़ता था इस कारण यहाँ व्यापारिक गतिविधियाँ पूरे उत्कर्ष पर थीं।[1] दिल्ली, सूरत, अहमदाबाद, पटना, ढाका, काबुल, मुर्शिदाबाद तथा कांधार आदि महत्वपूर्ण नगरों को जाने बाले व्यापारिक काफिले यहाँ से होकर गुजरते थें। यमुना तथा चम्बल नदियों के द्वारा ही आगरा से व्यापार होता था।[2] आगरा का वस्त्र उद्योग बहुत प्रसिद्ध था। आगरा से सूती और रेशमी कपड़ों का प्रमुख रूप से निर्यात होता था। चाँदी के काम का जरी का कपड़ा यहाँ पर बनता था।[3] यहाँ सूती तथा रेशमी वस्त्र गुजरात तथा बंगाल से आता था। आगरा के राजकीय कारखानों में दरियाँ भी बनती थी।[4] आगरा का व्यापारिक महत्व अधिक होने के कारण यहाँ पर भारतीय सामंत वर्ग एवं समृद्ध विदेशी व्यापारी रहते थे। इंगलिश ईस्ट इण्डिया कम्पनी और डच ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने आगरे में अपनी कपनियाँ स्थापित की थी। अंग्रेज जो माल विदेशों से सूरत लाते थे, उसमें मूँगा, हाथी दाँत, पारा और गर्म कपड़े आदि आगरा के बाजारों में बेचते थे।[5] इसी प्रकार डच आगरा में गर्म कपड़ा (ऊनी वस्त्र), छोटे एवं बड़े दर्पण, लोहा आदि को लाकर बेचते थे।[6] व्यापारिक वस्तुएँ काफिलों के माध्यम से अन्य स्थानों से भी आगरा आती थी। तांबा सूरत होते हुए आगरा पहुँचता था। आगरा में खपत के अतिरिक्त माल अन्य जगहों पर भेज दिया जाता था।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 1, January 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

आगरा के वस्त्र उद्योग के अतिरिक्त इसका समीपवर्ती क्षेत्र बयाना नील उत्पादन के लिए विख्यात था। यहाँ नील की खेती उत्कृष्ट होती थी।[7] यहाँ पर तीन प्रकार के नील का उत्पादन होता जिसमें नौती, जियारे और कटेल प्रमुख रूप से जाने जाते थे। नौती की गुणवत्ता कटेल से काफी अच्छी थी। जियारे और नौती की कीमत में एक रूपये का अंतर था।[8] सत्रहवीं शताब्दी में आगरा से नील बड़ी मात्रा में यूरोप को निर्यात किया जाता था। यह नील लाहौर के मार्ग से होकर फारस तथा यूरोप भेजा जाता था। इस कारण से इसको 'लाहौरी नील' के नाम से भी जाना जाता था। यह नील आगरा से ऊँटों के काफिलों द्वारा सूरत लाया जाता था। सूरत से अंग्रेज और डच व्यापारी नील यूरोप को निर्यात करते थे।[9]

आगरा के स्थानीय व्यापार में दलालों का सबसे महत्वपूर्ण स्थान था। अंग्रेज और डच व्यापारी उनकी सेवाओं का लाभ उठाते थे। आगरा में बहुमूल्य हीरों का व्यापार होता था।[10] आगरा शोरा निर्माण का एक प्रमुख केन्द्र था। शोरा बारूद बनाने के काम आता था।[11] आगरा के शाही कारखानों में कागज का उत्पादन भी किया जाता था।[12] आगरा गरम मसालो के उत्पादन के लिए भी प्रसिद्ध था। आगरा के गरम मसाला के बारे में पेल्सर्ट ने जो कुछ लिखा है, उसके अनुसार डच फैक्टरी अपने कर्मचारियों के भुगतान के लिए मसालों की बिक्री पर पूर्णतः निर्भर थी। आगरा या वस्तुतः मुगल दरबार भारत में मसालों का अत्यन्त विशाल बाजार था।

आगरा में सीसा (कांच) उद्योग भी प्रसिद्ध था। सीसा का प्रयोग भारत में प्राचीन काल से ही होता रहा था। सीसे की अनेक वस्तएँ जैसे दर्पण, बोतल, तश्तरी, गुलदस्ते, चश्मे, पीकदान आदि दिन–प्रतिदिन के प्रयोग में आती थी। सीसे से बनी बस्तुओं का आयात भी होता था। बादशाह और सामंत वर्ग में इसकी माँग बहुतायत से थी।[13] यूरोपीय व्यापारी भी बादशाह और दरबारियों को सीसे से बनी वस्तुएँ जैसे विशाल दर्पण, लालटेन, गिलास आदि उपहार स्वरूप भेंट करते थे। परन्तु यह उल्लेखनीय है कि भारत में निर्मित सीसे, विशेष रूप से दर्पण, विदेशों से आयातित दर्पणों की तुलना में घटिया किस्म के थे इसलिए अमीरों तथा शाही परिवार में विदेशी सीसे की अधिक माँग थी।[14] इस प्रकार आगरा एक औद्योगिक एवं व्यापारिक नगर के रूप में भी उतना ही महत्व था जितना राजनीतिक रूप से था। भारत में उत्पादित वस्तुओं की यहाँ पर एक बड़ी मण्डी थी और यहीं से आंतरिक और विदेशी व्यापार संचालित होता था।

बनारस

बनारस प्राचीन काल से ही एक व्यापारिक नगर था। यहाँ की रेशमी साड़ी विश्व प्रसिद्ध थी। अच्छे कपड़ों के निर्माण के कारण ही विदेशी व्यापारियों ने इसकी ओर पदार्पण किया तााि यहाँ का रेशमी कपड़ा इस नगर की समृद्धि का मुख्य कारण बना।[15] बनारस में अच्छा और खूबसूरत रेशम का कपड़ा बनता था। सोना और चांदी के तारों से कढ़ा हुआ कपड़ा बड़ी मात्रा में बनता था। इस कपड़े की न केवल मुगल

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 1, January 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

साम्राज्य में मांग थी बल्कि इस कपड़े को संसार के भिन्न–भिन्न भागों में निर्यात भी किया जाता था। बढ़िया कपड़े के अतिरिक्त बनारस में पीपल और ताँबे के बर्तन भी बनते थे।[16] इसके अतिरिक्त बनारस में पटुआ, पगड़ी हिन्दू स्त्रियों के लिए वस्त्र, त्सोखम्बर, गंगाजिल (एक सफेद कपड़ा) का उत्पादन भी होता था। साथ ही ताँबे का लोटा, तश्तरियाँ, पतीलियाँ, कटोरे एवं हिन्दू परिवारों के उपयोग में आने बाली अन्य बस्तुएँ भी निर्मित होती थी। इसके अतिरिक्त बनारस के खाद्य पदार्थ भी स्वादिष्ट एवं सस्ते थे। यात्रियों तीर्थयात्रियों और व्यापारियों के ठहरने के लिए बनारस में अनेक सरायें थीं। साथ ही, बनारस में उत्तम कोटि की तलवार का निर्माण भी होता था।

बनारस मिट्टी के बर्तनों का भी एक प्रसिद्ध केन्द्र था। शुद्धता की दृष्टि से, प्राचीन काल से ही मिट्टी के बर्तनों का प्रयोग होता था। कुम्हार मिट्टी के बर्तनों, पानी पीने के लिए मटके और विभिन्न प्रकार के कलात्मक खिलौने बनाते थे। यह उद्योग सारे देश में फैला हुआ था[17] बनारस में इत्र का निर्माण भी किया जाता था। ताँबा और पीतल के लिए बनारस प्रसिद्ध था। धार्मिक दृष्टि से ताबां बड़ी ही महत्वपूर्ण धातु थी। यह सिक्के बनाने के भी काम आती थी। प्रायः यहाँ मंदिरों की मुर्तियाँ ताँबे की बनी होती थीं। भवन–निर्माण में अधिकांशतया ताँबे का ही प्रयोग होता था। मुस्लिम परिवारों में भी आज कल की तरह ताँबे के बर्तनों का प्रयोग होता था। अतः यह अनुमान लगाया जा सकता है कि स्थानीय आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए हर नगर में इन बर्तनों का निर्माण होता था।[18] बनारस का वर्णन करते हुए ट्रैवर्नियर लिखता है कि ''यहाँ बहुत सी सरायें है। इनमें एक विशाल तथा काफी अच्छी सराय है। यहाँ पर कारीगर विभिन्न प्रकार का कपड़ा बेचने के लिए आते हैं। विदेशी इस कपड़े को खरीदते हैं। कपड़ा बेचने से पूर्व कारीगर कपड़े पर सरकारी मोहर लगवाते थे अन्यथा उनको कोड़े लगाये जाते थे और जुर्माना किया जाता था। राल्फ फिंच के अनुसार बनारस एक बड़ा शहर था यहाँ के मकान साफ–सुथरे तथा नदी के किनारे बसे हुए थे। यहाँ पर बहुत से मंदिर थे तथा सूती कपड़े के निर्माण का यह बहुत अच्छा केन्द्र था।[19] राल्फ फिंच ने स्त्रियों के कानों में बाली एवं मांथे पर सिन्दूर का अल्लेख किया है। उस समय मुगल काल में भी बादशाह, शाही परिवार एवं सामंत वर्ग भी रत्नजड़ित आभूषणों का प्रयोग करते थे। आभूषणों के निर्माण के लिए बनारस में निपुण कारीगर लगे हुए थे। बिहारी रत्नाकर के दोहों में आभूषणों का विस्तृत उल्लेख मिलता है।[20]

पटना

मुगल काल में पटना भी व्यापार का एक प्रमुख केन्द्र था। पटना सड़क तथा गंगा नदी के द्वारा बंगाल से जुड़ा हुआ था। पटना के बाजारों में भारतीय, पुर्तगाली, अरब, फारस आदि स्थानों के व्यापारी व्यापारिक वस्तुओं को खरीदने के लिए आपस में होड़ मचाते थे। पटना के बाजार स्थनीय और विदेशी

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 1, January 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

व्यापारियों से भरे रहते थे। मनूची पटना से बंगाल नाव द्वारा नदी मार्ग से गया था। पटना में अंग्रेजों और डचों की फैक्टरियां भी स्थापित थी। पटना में सूती और रेशम का कपड़ा बुना जाता था। यह कपड़ा सूरत के बंदरगाह से निर्यात होता था।[21]

पटना में 1000–2000 मन रेशम वार्षिक पैदा होता था। इसमें से सर्वोत्कृष्ट 16 या 17 मोहर प्रतिमन (50 पौण्ड) के हिसाब से बिकता था। एक मोहर का मूल्य अगर सात रूपये मान लिया जाये तो इसका मूल्य 110–120 रूपये के मध्य आता है। इसमें से अधिकांश गुजरात के प्रयोग में आ जाता था शेष आगरा में जाता था। कच्चा रेशम क्रय करने के लिए पटना में सात फैक्टरियॉ थी लेकिन भारी हानि के कारण छः वर्षों तक चलाने के पश्चात उसको बंद कर दिया गया। फिर ये फैक्टरियॉ दबारा शुरू नहीं की गई। इसके स्थान पर अब वे अधिक उचित मूल्यों पर पर्शियन रेशम खरीदते थे। पटना में काफी मात्रा में मलमल (केसा) भी पैदा होता था, लेकिन यह मोटा था। जिसके कारण इसका उचित मूल्य नहीं मिलता था। यह प्रति टुकडा 4–5 रूपये के मध्य ही होता था। पटना में ढालें भी बनती थी जो आगरा में काफी अधिक बिकती थी।[22]

पटना प्रमुख रूप से शोरे के लिए प्रसिद्ध था। शोरा बारूद बनाने के काम आता था, इसका कारण, यूरोप में इसकी बड़ी मांग थी। सरकारी मांग की पूर्ति के साथ–साथ शोरे का बड़ी मात्रा में यहॉ से निर्यात होता था। डचों ने शोरे को साफ करने के लिए पटना से 10 कोस की दूरी पर छपरा में अपनी फक्टरी स्थापित की थी।[23]

कपड़ें और शोरे के अतिरिक्त पटना मिट्टी के बर्तनों के लिए भी प्रसिद्ध था। यहां मिट्टी के बड़े सुन्दर और सुरूचिपूर्ण बर्तन बनते थे जो इतने पतले होते थे कि कागज से थोड़े ही मोटे प्रतीत होते थे। शाही परिवार और सामंतों के परिवार में इसका प्रयोग किया जाता था। पटना में भी कागज का उत्पादन किया जाता था। पटना में ऊनी वस्त्रों का उत्पादन भी किया जाता था। इसमें ऊनी शाल प्रमुख है।[24] परन्तु कश्मीरी शाल अन्य स्थानों के ऊनी उत्पादों की तुलना में अत्यन्त श्रेष्ठ मानी जाती थी।

ढ़ाका

प्राचीन काल से ही ढ़ाका एक व्यवसायिक एवं व्यापारिक नगर के रूप में प्रसिद्ध था। समुद्र के किनारे होने के कारण ढ़ाका एक महत्वपूर्ण बंदरगाह था। ढ़ाका मुगल काल में बंगाल के व्याापर का बहुत बड़ा केन्द्र था। यहाँ पर प्रांतीय सूबेदार का निवास–स्थान भी था। ढ़ाका के बाजारों में अनेक विदेशी– पुर्तगाली, अग्रेंजी और डच आते थे। ढ़ाका का क्षेत्र उत्तम मलमल (केस्सा) एवं हमेयिम, (बंगाल की सुप्रसिद्ध एवं उच्च कोटि की छींट थी) भी पैदा करता था। यह एक उत्कृष्ट चौड़ा वस्त्र था जो कि बिस्तर की चादरों के लिए उपयुक्त था। ढ़ाका में पुर्तगालियों का व्यापक स्तर पर व्यापार था। इन लोगों के व्यापारिक

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 1, January 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

जहाज प्रतिवर्ष मलक्का एवं मकाओं जाया करते थ। ये जहाज मसाले, कपड़ा (गर्म कपड़ा), सीसा, टिन (रांगा), पारा एवं सिन्दूर ढ़ाका लाते थे एवं वापसी में कई प्रकार के सूती वस्त्र एवं मलमल खरीद कर ले जाते थे।[25] यहाँ अंग्रेजो और डचों की फैक्टरियां स्थपित थीं।

ढ़ाका का मलमल सारे संसार में प्रसिद्ध था। इसका धागा अत्यन्त बारीक होता था। इसे चर्खे पर हाथ से काता जाता था। ढ़ाका के मलमल की एक थान एक अगूँठी के बीच से निकल सकती थी। यूरोपीय यात्रियों ने इसकी भूरि–भूरि प्रशांसा की है। इस उच्च कोटि के मलमल को विभिन्न नामों से पुकारा जाता था जैसे– मलमल खास (बादशाह की मलमल), सरकारे आली (नवाब की मलमल), अरबे खाँ (बहता हुआ पानी), शबनम, गंगाजल आदि।[26] ढ़ाका के मलमल का विदेशों में बड़ी मात्रा में निर्यात होता था ढ़ाका के समीपवर्ती क्षेत्रों में बहुत से धोबी रहते थे, क्योंकि यहाँ का पानी कपड़े धोने के लिए बड़ा उपयुक्त था। कपडे को नील से रंगा जाता था भारतीय कपड़ों की विदेशों में बड़ी माँग थी। विश्व के लगभग हर भाग में भारत से कपड़ा जाता था।

सूरत

सूरत 17वीं शाताब्दी में भारत का ही नहीं अपितु संसार का एक प्रसिद्ध व्यापारिक केन्द्र था। यहाँ पर सभी प्रकार की व्यापारिक वस्तुओं का आयात एवं निर्यात किया जाता था। भारत के लगभग सभी स्थानों से माल सूरत आता था। सूरत स्वयं वस्त्र उद्योग के लिए प्रसिद्ध था। यहाँ सूती, रेशमी और सोना–चाँदी के तारो से बुना हुआ कपड़ा बनाया जाता था।[27] यहॉ रेशम बंगाल से आता था। सूरत में रेशम की दरियॉ भी बनती थी। रेशम के कपड़े पर जरी का काम भी सूरत में होता था। कपड़ा रंगने के लिए नील पास के ही एक स्थान सरखेज से आता था। सूरत निश्चित स्थल मार्गों द्वारा देश के भिन्न–भिन्न भागों से जुड़ा हुआ था। समुद्रतटीय व्यापार के लिए सूरत, बम्बई, गोवा, ड्यू, मालाबार तट, कोरोमण्डल तट और बंगाल से जुड़ा हुआ था। सूरत में जहाज–निर्माण का भी एक विकसित उद्योग था। इंगलिश कम्पनी अपने जहाजों की मरम्मत सूरत में करवाती थी। साथ ही नावों का निर्माण भी सूरत में होता था।[28]

1650 के आसपास तक सूरत में जहाजों की संख्या लगभग 50 थी। 1650 में ही मुगल सम्राट शाहजहॉ ने प्रतिवर्ष छः से आठ मजबूत एवं अच्छे जहाज बनवाने का आदेश दिया था। यह काम तब तक चलता रहा जब तक कि मुगल सम्राट औरंगजेब ने इसे समाप्त नहीं कर दिया। फिर भी 17वीं शताब्दी की समाप्ति के समय अकेले सूरत में 112 समुद्री जहाज तैनात थे।[29]

डेलावेला, ओविंग्टन और थेवनाट सूरत को एक घना बसा हुआ नगर बताते है। इस समय भारत के बड़े नगरों की जनसंख्या 2 लाख से 4 लाख तक थी इसमें सूरत की जनसंख्या 2 लाख थी। मध्यकालीन भारतीय इतिहास में लगभग प्रत्येक नगर में जुलाहे रहते थे। बड़े–बड़े नगरों में उनकी संख्या और भी

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 1, January 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

अधिक थी। सूरत में तो यह लगभग सभी नगरों से अधिक थी। सूरत में कपड़े को धोने तथा उसको डाई करने (रंगने) में वहॉ के जुलाहे दक्ष थे। नील द्वारा कपड़ों की रंगाई की जाती थी। जो लोग दक्ष एवं प्रशिक्षित थे वही अधिकतर डाई करने का कार्य करते थे।[30] 1664 में शिवाजी ने सूरत पर आक्रमण किया तो औरंगजेब ने वहॉ के व्यापार को राहत देने हेतु व्यापारियों के समस्त आयात–निर्यात पर से सीमा शुल्क (कस्टम ड्यूटी) माफ कर दिया था। उससे इंगलिश ईस्ट इण्डिया कम्पनी को 25000 रूपया की बचत हुई। यह स्पष्ट होता है। कि अंग्रेजी ईस्ट इण्डिया कम्पनी का सूरत के व्यापार पर कितना बढ़ा अधिकार था। मुगल साम्राज्य को एक बड़ी राशि इस महत्वपूर्ण बंदरगाह से कस्टम के रूप में प्राप्त होती थी। औरंगजेब के बाद क्रमशः भारत के अन्य समुद्र तटों के बंदरगाह अधिक महत्वपूर्ण होते चले गये। कुल मिलाकर मुगल साम्राज्य के पतन के साथ ही सूरत का महत्व भी कम हो गया। 17वीं शताब्दी में सूरत का जो महत्व था, वहीं 18वीं शताब्दी में बम्बई का हो गया। इसके लिए मुगल साम्राज्य की अस्थिर राजनीतिक स्थिति उत्तरदायी थी। इंग्लिश ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने सूरत के स्थान पर बम्बई को अपने व्यापार का मुख्य केन्द्र बना लिया।[31]

कैम्बे

गुजरात के समुद्री पत्तनों में सूरत के पूर्व कैम्बे काफी महत्वपूर्ण स्थान था।[32] स्थानीय उत्पादन, राज्य से संग्रहित उत्पादन तथा भारत एवं दूसरे राज्यों के उत्पादन का भी यह एक प्रमुख केन्द्र था। 16वीं शताब्दी में कैम्बे वस्त्र निर्माण का महत्वपूर्ण केन्द्र था। यह सूती कपड़ा, रेशम और सोने–चांदी के तारों के बने जरी के कपड़ों का प्रसिद्ध केन्द्र था। यहाँ नगर के मध्य में बाजार थे जो व्यापारियों से भरे रहते थे। नगर की सुरक्षा के लिए चहारदीवारी थी तथा सड़के चौड़ी और पक्की थी। थेवनाट के अनुसार कैम्बे की सड़के लम्बी थी तथा उनके अंत में बड़े द्वार थे जो रात को बन्द हो जाते थे। रूई और धागा कैम्बे से अन्य बंदरगाहों को भेजा जाता था। बारबोसा के अनुसार कैम्बे एक सुन्दर व्यापारिक नगर था यहाँ संसार के सभी देशों के व्यापारी देखे जा सकते है और यह नगर विपुल कारीगरों से भरा हुआ था।

17वीं शाताब्दी में सूरत के व्यापारिक महत्व में काफी वृद्धि होने के साथ ही कैम्बे का पतन होना शुरू हो गया थ। अंग्रेज और डच व्यापारियों ने सूरत को अपने व्यापार को केन्द्र बना लिया था। 18वीं शाताब्दी में कैम्बे वस्त्र निर्माण के स्थान पर कच्चा माल जैसे रूई और सूती धागा खरीदने का केन्द्र बन गया। सूती धागा बम्बई जाता था जहाँ इसका कपड़ा बुना जाता था और यरोप को निर्यात कर दिया जाता था। 16वीं शाताब्दी में पुर्तगाली कैम्बे से बहुत सी वस्तुओं का व्यापार करते थे। आगे चलकर कैम्बे का व्यापार लगभग समाप्त हो गया, क्योंकि पूर्व से प्रत्येक वर्ष यहाँ तीन काफिले आया करते थे। चूँकि 1626 के आसपास व्यापार में इतनी अधिक गिरावट आ गयी कि केवल 40 व्यापारी ही फुस्ताज पहुँचे। इससे यहाँ

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 1, January 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

का व्यापार काफी गिर गया। यही से कैम्बे को व्यपारिक पतन दिखता था। पुर्तगाल के व्यापारी अपना सभी माल जैसे चानी रेशम एवं मसाले दोनों दक्षिण (मलक्का जावा और सुमात्रा) के जलपोतों से लाते थे एवं यूरोपियन माल व्यवसायिक जहाजों के द्वारा गोवा से सभी स्थानों को वितरित करते थे। कैम्बे के व्यापारियों को इस खरीद एवं बिक्री पर वहुत ही कम लाभ होता था।[33]

बम्बई

मुगल काल में सूरत के पश्चात् बम्बई सबसे अधिक महत्वपूर्ण बंदरगाह था। भौगोलिक दृष्टिकोण से बम्बई 1855 उत्तरी अक्षांश एवं 72.54 पूर्वी देशान्तर पर स्थित है। 17वीं शताब्दी में बम्बई का द्वीप चार्ल्स द्वितीय को पुर्तगाल के सम्राट से दहेज में प्राप्त हुआ था। चार्ल्स द्वितीय ने इस द्वीप को 10 पौण्ड वार्षिक के साधारण किराये पर 1668 में ईस्ट इण्डिया कम्पनी को दे दिया। इंग्लिश ईस्ट इण्डिया कम्पनी के सर जार्ज ऑक्सिण्डन को (जो सूरत फैक्टरी का प्रेसीडेंट था) बम्बई का गर्वनर और कमाण्डर–इन–चीफ बनाया था। कम्पनी ने बम्बई का विकास किया और जुलाहों को बम्बई में बसने के लिए प्रोत्साहित किया। कम्पनी ने उन्हें हर सुविधा देने का वचन भी दिया। इससे, बहुत से जुलाहे कम्पनी के प्रोत्साहन पर बम्बई आकर बस गये। फ्रायर ने बम्बई और उसकी सुरक्षा के लिए बने किले का भी वर्णन किया है। कम्पनी ने बम्बई को वस्त्र उधोग को केन्द्र बनाने के लिए बहुत अधिक परिश्रम किया था। सुरत की अंग्रेजी फैक्टरी का प्रधान तथा 1669–1677 तक बम्बई का गवर्नर गैराल्ड औंगियार ही वास्तव में बम्बई की महानता का संस्थापक था। वह बम्बई को व्यापार एवं जहाजरानी के लिए पूरी तरह से सुरक्षित क्षेत्र बनाना चाहता था। उसने ताँबे और चाँदी के सिक्के ढ़ालने के लिए एक टकसाल भी स्थापित की थी। गैराल्ड के नेतृत्व में बम्बई सभी व्यपारियों तथा उत्पादों का आश्रयस्थल बन गयी थी। उसके समय में बम्बई की जनसंखया बढ़कर 60000 तक हो गयी थी और राजस्व भी बढ़कर तिगुना हो गया।[34]

इस प्रकार 17वीं शाताब्दी के अंत तक व्यापार के क्षेत्र में बम्बई ने अपना एक स्थान बना लिया था, लेकिन जैसे ही मुगल साम्राज्य पतन की तरफ बढ़ा, और सूरत जैसे प्रसिद्ध व्यापारिक केन्द्र का पतन शुरू हुआ, उसका स्थान बम्बई ने ले लिया। 18वीं शताब्दी तक यूरोपीय कम्पनियों का प्रमुख व्यापारिक केन्द्र बम्बई बन गया।

अन्तर्देशीय व्यापार

मुगल काल में औधोगिक एवं व्यापारिक नगरों का विस्तार देश के सम्पूर्ण भाग में था। आवश्यकतानुसार देश के एक कोने से दूसरे कोने तक वस्तुओं का व्यापार होता था। यद्यपि सड़क मार्गो से काफी व्यापार होता था तथापि सडकों एवं परिवहन के साधनों की स्थिति बहुत उन्नत न होने के कारण भी भारी वस्तुओं का दूर तक परिवहन कठिन था। अतः देश की महत्वपूर्ण नदियों द्वारा व्यापारिक माल का

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 1, January 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

परिवहन अपेक्षाकृत सुगम, सुविधाजनक तथा सस्ता था। परिवहन लागत का व्यापार पर कितना अधिक प्रभाव पड़ता था इसे हम मुल्तान के उदाहरण से समझ सकते हैं। यहाँ उत्पादित 'कैलिको' वस्त्र की एक बड़ी खेप सिंध नदी के द्वारा थट्टा को भजी जाती थी। नदी के मुहाने पर बालू का अत्याधिक जमाव हो जाता था जिससे परिवहन लागत अत्यधिक बढ़ जाती थी इस कारण से उत्पादन पर बुरा असर पड़ता था।

बंगाल, सिंध और कश्मीर में अन्तर्देशीय व्यापार विशेषकर नौकाओं के द्वारा ही होता था। नदियों के मुहानों पर बंदरगाह होते थे जहाँ व्यापारिक माल को एकत्र किया जाता था। उत्तर भारत में गंगा तथा उसकी सहायक नदियाँ जलमार्ग का काम करती थी जिनसे व्यापारिक माल इलाहाबाद से बनारस व पटना के रास्ते बंगाल में ढ़ाका तक पहुँचाया जाता था। यमुना नदी के माध्यम से आगरा व इलाहाबाद के बीच व्यापारिक सम्बंध स्थापित हो चुके थे। बंगाल व उड़ीसा, बालासोर, मिदनापुर, कासिम बाजार व राजमहल के रास्ते जलमार्ग से जुड़े थे। पीटरमुण्डी ने अपनी यात्रा के दौरान इटावा के पास नदी में नौकाओं का एक व्यापारिक बेड़ा देखा था जिनमें भरा माल आगरा से ढ़ाका भेजा जा रहा था। गंगा नदी के रास्ते पश्चिम से पूर्व की ओर ले जाने वाली एक मुख्य वस्तु नमक भी था। अनाज, नमक तथा शोरे जैसी वस्तुएँ प्रायः नदी मार्ग से ही ढ़ोयी जाती थी। अकेले आगरा से बंगाल दस हजार टन नमक प्रतिवर्ष नदी मार्ग से ले जाने का उल्लेख मिलता है। विदेशी यात्री विलियम फिंच ने 104 भारी बोझा ढ़ोने वाली नावों के जिस बेड़े के साथा आगरा से सतगाँव तक की यात्रा की थी उनमें से प्रत्येक नाव पर चार से पाँच सौ टन तक नमक तथा अन्य वस्तुएँ लदी हुई थी।[35]

मुगल काल में भारतीय व्यापार के संदर्भ में एक महत्वपूर्ण घटना यह हुई कि सोलहवीं शताब्दी के अन्त में विभिन्न वाणिज्यिक वस्तुओं की कीमतों में भारी वृद्धि हुई जिससे व्यापार का तेजी से विकास हुआ। पाइरार्ड ने इसका कारण डचों की स्पर्धा को बाताया है। मुगल काल में भारत का व्यापारिक दृष्टिकोण उच्चकोटि का था। आधुनिक मापदण्डों को देखने पर भी भारत में देशीय व्यापार का परिमाण निश्चय ही बहुत थोड़ा सा लगता था लेकिन समकालीन पैमाने से परखे तो मोरलैण्ड के अनुसार निःसंदेह यह भारत की एक बहुत ठोस उपलब्धि थी।

सन्दर्भ

1. अबुल फजल, आइन–ए–अकबरी, अनु0 ब्लौचमैन भाग 1, पृ0 दिल्ली, 1989 पृ0 190।
2. वही,पृ0 190।
3. मनूची, स्टोरिया डी मोगोर, अनु0 विलियम इरविन, भाग 2, लदंन, 1907–1908 पृ0 424,
4. आइन–ए–अकबरी, अनु0 ब्लौचमैन भाग 1, पृ0 99।
5. इंगलिश फैक्टरीज इन इण्डिया सम्पा0 डब्लू0 फोस्टर, 1618–1621 पृ0 47, 302।
6. बर्नियर, टैवेल्स इन द मुगल एम्पायर 1656–1668 अनु0 ए0 कास्टेबुल, नई दिल्ली, 1983, पृ0 292।
7. ट्रैवर्नियर ट्रैवेल्स इन इण्डिया, सम्पा0 बी0 बाल, भाग 2, लंदन 1885, पृ0 7।

8. पेल्सर्ट जहाँगीरकालीन भारत, हिन्दी अनु0 बी0 एल0 भादानी, दिल्ली पृ0 31।
9. दाख रजिस्टर, भग 17, पृ0 105 109,।
10. राल्फ फिंच, इग्लैण्ड्स पायनियर टू इण्डिया एण्ड वर्मा, सम्पा0 जे0 एच0 रिले, लदंन 1889, पृ0 99।
11. ट्रैवर्नियर, भाग 2, पृ0 10।
12. लईक अहमद, मध्यकालीन भारतीय संस्कृति, पृ0 214।
13. चोपडा, पुरी और दास, भारत का सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक इतिहास, भाग 2, नई दिल्ली, 2004 पृ0 96।
14. वही पृ0 96।
15. मैनरीक, टैवेल्स, अनु0 सी0ई0 लार्ड एण्ड फादर एच0 होस्टन, भाग 2 लदंन, 1927 पृ0 83, 428।
16. पेल्सर्ट पूर्वोद्धत, पृ0 7।
17. मनूची, पूर्वोद्धत, भाग 2, पृ0 83 428।
18. इरफान हबीब, भारत का आर्थिक इतिहास, पृ0 52–53
19. हरिश्चन्द्र वर्मा, मध्यकालीन भारत, पृ0 612
20. वही पृ0 612–613
21. मनूची, पूर्वोद्धत, भाग 2, पृ0 83।
22. पेल्सर्ट पूर्वोद्धत, पृ0 25–26।
23. ट्रैवर्नियर, पूर्वोद्धत, भाग 2, पृ0 10।
24. वही पृ0 10–11
25. पेल्सर्ट, पूर्वोद्धत, पृ0 27।
26. बारबोसा, बुक ऑफ दुआर्ते बारबोसा, भाग 2, पृ0 145।
27. ट्रैवर्नियर, पूर्वोद्धत भाग 2, पृ0 2।
28. इरफान हबीब भारत का आर्थिक इतिहास पृ0 52–53
29. सतीश चन्द्र, हिस्ट्री ऑफ मीडिवल इण्डिया, भाग 22, पृ0 413।
30. दि कोर्ट मिनट्स एटसैटरा आफ दि ईस्ट इण्डिया कम्पनी 1635–1679, सम्पा0 वाई0ई0बी0 सैटवरी, 1630–1633, पृ0 213–234,।
31. हरिश्चन्द्र वर्मा, पूर्वोद्धत, भाग 2, पृ0 622।
32. हमीदा खातून नकवी, अर्बन सेन्टर्स एण्ड इण्डस्ट्रीज इन अपर इण्डिया (1556–1803), पृ0 106।
33. पेल्सर्ट, पूर्वोद्धत, पृ0 37–38।
34. बी0के0 अग्निहोत्री, भारतीय इतिहास, पृ0 249।
35. विलियम फोस्टर, अर्ली टैवेल्स इन इण्डिया 1583–1619 पृ0 84–85।